2 पतरस

1 यीशु मसीह के सेवक तथा प्रेरित शमौन पतरस की ओर से उन लोगों के नाम जिन्हें परमेश्वर से हमारे जैसा ही विश्वास प्राप्त है। क्योंकि हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह न्यायपूर्ण हैं।

2तुम परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान चुके हो इसलिए तुम्हें परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह अधिक से अधिक प्राप्त हों।

परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है

3अपने जीवन के लिये और परमेश्वर की सेवा के लिये जो कुछ हमें चाहिये, अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा उसने सब कुछ हमें दिया है। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने अपनी धार्मिकता और महिमा के कारण हमें बुलाया है। **4**इन्हीं के द्वारा उसने हमें वे महान और अमूल्य वरदान दिये हैं, जिन्हें देने की उसने प्रतिज्ञा की थी ताकि उनके द्वारा तुम स्वयं परमेश्वर के समान हो जाओ और उस विनाश से बच जाओ जो लोगों की बुरी इच्छाओं के कारण इस जगत में स्थित है।

5सो इसीलिये अपने विश्वास में उत्तम गुणों को, उत्तम गुणों में ज्ञान को, **6**ज्ञान में आत्मसंयम को, आत्मसंयम में धैर्य को, धैर्य में परमेश्वर की भक्ति को, **7**भक्ति में भाईचारे को और भाईचारे में प्रेम को उदारता के साथ बढ़ाते चलो। **8**क्योंकि यदि ये गुण तुममें हैं और उनका विकास हो रहा है तो वे तुम्हें कर्मशील और सफल बना देंगे तथा उनसे तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा। **9**किन्तु जिसमें ये गुण नहीं हैं, उसमें दूर–दृष्टि नहीं है, वह अन्धा है। तथा वह यह भूल चुका है कि उसके पूर्व पापों को धोया जा चुका है।

10इसलिये हे भाइयो, यह दिखाने के लिये और अधिक तत्पर रहो कि तुम्हें वास्तव में परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है और चुना गया है क्योंकि यदि तुम इन बातों को करते हो तो न कभी ठोकर खाओगे और न ही गिरोगे **11**और इस प्रकार हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हें प्रवेश देकर परमेश्वर अपनी उदारता दिखायेगा।

12इसी कारण मैं तुम्हें, यद्यपि तुम उन्हें जानते ही हो और जो सत्य तुम्हें मिला है, उस पर टिके भी हुए हो, इन बातों को सदा याद दिलाता रहूँगा। **13**मैं जब तक इस काया में हूँ, तुम्हें याद दिलाकर सचेत करते रहने को उचित समझता हूँ।

14क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मुझे अपनी इस काया को शीघ्र ही छोड़ देना है। जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे समझाया है। **15**इसलिये मैं हर प्रयत्न करूँगा कि मेरे मर जाने के बाद भी तुम इन बातों को सदा याद कर सको।

हमने मसीह की महिमा के दर्शन किये हैं

16जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के समर्थ के आगमन के विषय में हमने तुम्हें बताया था, तब चतुरतापूर्वक गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया था क्योंकि हम तो उसकी महानता के स्वयं साक्षी हैं। **17**जब परम पिता परमेश्वर से उसने सम्मान और महिमा प्राप्त की तो उस दिव्य–महिमा से विशिष्ट वाणी प्रकट हुई–"यह मेरा प्रिय पुत्र है, मैं इससे प्रसन्न हूँ।" **18**हमने आकाश से आयी वह वाणी सुनी थी। तब हम पवित्र पर्वत पर उसके साथ ही थे।

19हमें भी नबियों के वचन पर और अधिक आस्था हुई। इस पर ध्यान देकर तुम भी अच्छा कर रहे हो क्योंकि यह तो एक प्रकाश है, जो एक अन्धेरे स्थान में तब तक चमक रहा है जब तक पौ फटती है और तुम्हारे हृदयों में भोर के तारे का उदय होता है। **20**किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी नबी के निजी विचारों का परिणाम नहीं है **21**क्योंकि कोई मनुष्य जो कहना चाहता है, उसके अनुसार भविष्यवाणी नहीं होती। बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मनुष्य परमेश्वर की वाणी बोलते हैं।

झूठे शिक्षक

2 जैसा भी रहा हो उन संत जनों के बीच जैसे झूठे नबी दिखाई पड़ने लगे थे बिलकुल वैसे ही झूठे नबी तुम्हारे बीच भी प्रकट होंगे। वे घातक धारणाओं का सूत्र–पात करेंगे और उस स्वामी तक को नकार देंगे जिसने उन्हें स्वतन्त्रता दिलायी। ऐसा करके वे अपने शीघ्र विनाश को निमन्त्रण देंगे। **2**बहुत से लोग उनकी भोग–विलास की प्रवृत्तियों का अनुसरण करेंगे। उनके

कारण सच्चाई का मार्ग बदनाम होगा। 3लोभ के कारण अपनी बनावटी बातों से वे तुमसे धन कमाएँगे। उनका दंड परमेश्वर के द्वारा बहुत पहले से निर्धारित किया जा चुका है। उनका विनाश तैयार है और उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

4क्योंकि परमेश्वर ने पाप करने वाले दूतों तक को जब नहीं छोड़ा और उन्हें पाताललोक की अन्धेरे से भरी कोठरियों में डाल दिया कि वे न्याय के दिन तक वहीं पड़े रहें। 5उसने उस पुरातन संसार को भी नहीं छोड़ा किन्तु नूह की उस समय रक्षा की जब अधर्मियों के संसार पर जल–प्रलय भेजी गयी थी। नूह उन आठ व्यक्तियों में से एक था जो जल प्रलय से बचे थे। धार्मिकता का प्रचारक नूह उपदेश दिया करता था। 6सदोम और अमोरा जैसे नगरों को विनाश का दण्ड देकर राख बना डाला गया ताकि अधर्मी लोगों के साथ जो बातें घटेंगी, उनके लिये यह एक चेतावनी ठहरे।

7उसने लूत को बचा लिया जो एक नेक पुरूष था। वह उद्दण्ड लोगों के अनैतिक आचरण से दु:खी रहा करता था। 8वह धर्मी पुरुष उनके बीच रहते हुए दिन–प्रतिदिन जैसा देखता था और सुनता था, उससे उनके व्यवस्था रहित कर्मों के कारण, उसकी सच्ची आत्मा तड़पती रहती थी। 9इस प्रकार प्रभु जानता है कि भक्तों को न्याय के दिन तक कैसे बचाया जाता है और दुष्टों को दण्ड के लिये कैसे रखा जाता है। 10विशेषकर उनको जो अपनी पापपूर्ण प्रकृति की बुरी वासनाओं के पीछे चलते हैं और प्रभु की प्रभुता से घृणा रखते हैं। ये उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी हैं। ये महिमावान स्वर्गदूतों का अपमान करने से भी नहीं डरते। 11जबकि ये स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में इन लोगों से बड़े हैं, प्रभु के सामने उन पर कोई निन्दापूर्ण दोष नहीं लगाते। 12किन्तु ये लोग तो विचारहीन पशुओं के समान हैं जो अपनी सहजवृत्ति के अनुसार काम करते हैं। जिनका जन्म ही इसलिये होता है कि वे पकड़े जायें और मार डाले जायें। वे उन विषयों के विरोध में बोलते हैं, जिनके बारे में वे अबोध हैं। जैसे पशु मार डाले जाते हैं, वैसे ही इन्हें भी नष्ट कर दिया जायेगा। 13इन्हें बुराई का बदला बुराई से मिलेगा। दिन के प्रकाश में भोग–विलास करना इन्हें भाता है। ये लज्जापूर्ण धब्बे हैं। ये लोग जब तुम्हारे साथ उत्सवों में सम्मिलत होते हैं तो 14ये सदा किसी ऐसी स्त्री की ताक में रहते हैं जिसके साथ व्यभिचार किया जा सके। इस प्रकार इनकी आँखें पाप करने से बाज़ नहीं आतीं। ये अस्थिर लोगों को पाप के लिये फुसला लेते हैं। इनके मन पूरी तरह लालच के आदी हैं। ये अभिशाप के पुत्र हैं। 15सीधा–सादा मार्ग छोड़कर ये भटक गये हैं। बओर के बेटे बिलाम के मार्ग पर ये लोग अग्रसर हैं; बिलाम, जिसे बदी की मज़दूरी प्यारी थी। 16किन्तु उसके बुरे कामों के लिये एक गदही, जो बोल नहीं पाती, मनुष्य की वाणी में बोली और उसे डाँटा फटकारा तथा उस नबी के उन्मादपूर्ण काम को रोका।

17ये झूठे उपदेशक सूखे जल–स्रोत हैं, तथा ऐसे जल रहित बादल हैं जिन्हें तूफान उड़ा ले जाता है। इनके लिये सघन अन्धकारपूर्ण स्थान निश्चित किया गया है। 18ये उन्हें जो भटके हुओं से बच निकलने का अभी आरम्भ ही कर रहे हैं, अपनी व्यर्थ की अहंकारपूर्ण बातों से उनकी भौतिक वासनापूर्ण इच्छाओं को जगा कर सत् पथ से डिगा लेते हैं। 19ये झूठे उपदेशक उन्हें छुटकारे का वचन देते हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति जो उसे जीत लेता है, वह उसी का दास हो जाता है।

20सो यदि ये हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह को जान लेने और संसार के खोट से बच निकलने के बाद भी फिर से उन ही में फंस कर हार गये हैं, तो उनके लिये उनकी यह बाद की स्थिति, उनकी पहली स्थिति से कहीं बुरी है 21क्योंकि उनके लिये यही अच्छा था कि वे इस धार्मिकता के मार्ग को जान ही नहीं पाते बजाय इसके कि जो पवित्र आज्ञा उन्हें दी गयी थी, उसे जानकर उससे मुँह फेर लेते। 22उनके साथ तो वैसे ही घटी जैसे कि उन सच्ची कहावतों में कहा गया है: "कुत्ता अपनी उल्टी के पास ही लौटता है।"* और "एक नहलायी हुई सुअरनी कीचड़ में लोट लगाने के लिये फिर लौट जाती है।"

यीशु फिर आयेगा

3 हे प्रिय मित्रो, अब यह दूसरा पत्र है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ। इन दोनों पत्रों में उन बातों को याद दिलाकर मैंने तुम्हारे पवित्र हृदयों को जगाने का जतन किया है 2ताकि तुम पवित्र नबियों द्वारा अतीत में कहे गये वचनों को याद करो और हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता के आदेशों का, जो तुम्हारे प्रेरितों द्वारा तुम्हें दिये गये हैं, ध्यान रखो। 3सबसे पहले तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि अंतिम दिनों में स्वेच्छाचारी हँसी उड़ाने वाले हँसी उड़ाते हुए आयेंगे 4और कहेंगे–"क्या हुआ उसके फिर से आने की प्रतिज्ञा का? क्योंकि हमारे पूर्वज तो चल बसे। पर जब से सृष्टि बनी है, हर बार, वैसे की वैसी ही चली आ रही है।" 5किन्तु जब वे यह आक्षेप करते हैं तो वे यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर के वचन द्वारा आकाश युगों से विद्यमान है और पृथ्वी जल में से बनी और जल में स्थिर है, 6और इसी से उस युग का संसार जल प्रलय से नष्ट हो गया। 7किन्तु यह आकाश और यह धरती जो आज अपने अस्तित्व में हैं, उसी आदेश के द्वारा अग्नि के द्वारा नष्ट होने के लिये सुरक्षित हैं। इन्हें उस दिन के लिए रखा जा रहा है जब अधर्मी लोगों का न्याय होगा और वे नष्ट कर दिये जायेंगे।

"कुत्ता...है" नीति. 26:11

8पर प्यारे मित्रो! इस एक बात को मत भूलो: प्रभु के
लिये एक दिन हज़ार साल के बराबर हैं और हज़ार
साल एक दिन जैसे हैं। **9**प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में
देर नहीं लगाता। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। बल्कि
वह हमारे प्रति धीरज रखता है क्योंकि वह किसी भी
व्यक्ति को नष्ट नहीं होने देना चाहता। बल्कि वह तो
चाहता है कि सभी मन फिराव की ओर बढ़ें।

10किन्तु प्रभु का दिन चुपके से चोर की तरह आयेगा।
उस दिन एक भयंकर गर्जना के साथ आकाश विलीन
हो जायेंगे और आकाशीय पिंड आग में जलकर नष्ट हो
जाएंगे तथा यह धरती और इस धरती पर की सभी
वस्तुएँ जल जाएगी। **11**क्योंकि जब ये सभी वस्तुएँ इस
प्रकार नष्ट होने को जा रही हैं तो सोचो तुम्हें किस
प्रकार का बनना चाहिये? (तुम्हें पवित्र जीवन जीना
चाहिये, पवित्र जीवन जो परमेश्वर को अर्पित है तथा
हर प्रकार के उत्तम कर्म करने चाहियें)। **12**और तुम्हें
परमेश्वर के दिन की बाट जोहनी चाहिए और उस दिन
को लाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। उस दिन
के आते ही आकाश लपटों में जल कर नष्ट हो जायेगा
और आकाशीय पिण्ड उस ताप से पिघल उठेंगे। **13**किन्तु
हम परमेश्वर के वचन के अनुसार ऐसे नये आकाश
और नयी धरती की बाट जोह रहे हैं जहाँ धार्मिकता
निवास करती है।

14इसलिये हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम इन बातों की
बाट जोह रहे हो, पूरा प्रयत्न करो कि प्रभु की दृष्टि में
और शांति में निर्दोष और कलंक रहित पाये जाओ।
15हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो। जैसा कि
हमारे प्रिय बन्धु पौलुस ने परमेश्वर के द्वारा दिये गये
विवेक के अनुसार तुम्हें लिखा था। **16**अपने अन्य सभी
पत्रों के समान उस पत्र में उसने इन बातों के विषय में
कहा है। उन पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना
कठिन है। अज्ञानी और अस्थिर लोग उनके अर्थ का
अनर्थ करते हैं। दूसरे शास्त्रों के साथ भी वे ऐसा ही
करते हैं। इससे वे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते
हैं।

17इसलिए हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम्हें ये बातें पहले से
ही पता हैं इसलिये सावधान रहो कि तुम बुराइयों और
व्यवस्थाहीन लोगों के द्वारा भटकाये जा कर अपनी
स्थिर स्थिति से डिग न जाओ। **18**बल्कि हमारे प्रभु तथा
उद्धारकर्ता यीशु मसीह की अनुग्रह और ज्ञान में तुम
आगे बढ़ते जाओ। अब और अनन्त समय तक उसकी
महिमा होतीर हे।